मानवी समाज जीवन पर बौद्ध तत्वज्ञान का प्रभाव

डॉ .मनोहर भी .येरकलवार
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविध्यालय,
अमरकंटक (मध्यप्रदेश)
ई .मेल - manoharigntu@gmail.com

सारांश -

आज के इस वैज्ञानिक युग में मानव समाज के सामने कई सारी समस्याए है। इन सारी समस्याओं की रक्षा करने के लिए फिर एक बार स्वतंत्र, समता, न्याय, भाईचारा को स्थापित करने के लिए बौद्ध तत्वज्ञान की बहुत जरूरी महसुस होती है। भारत का इतिहास इस बात का गवाह है कि, मानव समाज जीवन में व्यक्ति की गरिमा तथा व्यक्ती एवं समाज के बीच के संबंधों को परिभाषित करने का सक्रिय प्रयास बौद्ध तत्वज्ञान के द्वारा किया गया है। भारत में समय समय पर अनेक अवतारी महापुरुषों ने जन्म लिया जिन्होंने अपने काल की परिस्थितियों में देश को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने का प्रयास किया तथा अन्याय से न्याय की पथ पर अग्रसर होने की प्रेरणा दी। जिस देश में जाति, धर्म, पंथ, संप्रदाय, वर्ग और भाषा आदि के नाम पर भेद की स्थिति हो, जहां पर समाज का एक वर्ग निरंतर शोषण, अत्याचार तथा उपेक्षा की पीड़ा भोग रहा हो, इस तरह से धर्म और अर्थ पर आधारित विषम व्यवस्था से किसी भी देश का कभी भी विकास नहीं हो सकता। इस देश में ऐसा भी एक समय था, कि जब एक मनुष्य दूसरे मनुष्य को मनुष्य की तरह मानने के लिए तैयार नहीं था। वह एक दूसरे के साथ क्रूर या कठोर व्यवहार करता था। जितना कोई पशु से भी नहीं करता हो। ऐसी स्थिति में समाज का एक वर्ग दूसरे वर्ग के प्रताड़ना से इतना भयभीत था की जितना वह किसी हिसंक पशु से भी नहीं होता है। इस व्यवस्था को बदलने के लिए डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने 1956 में विश्व में शांति प्रस्तावित करने वाला भारत का प्राचीन बौद्ध धर्म को अपनाकर बौद्ध तत्वज्ञान को पुनर्जीवित किया और अपने अनुयायियों को इसके माध्यम से विकास की ओर लाने के लिए प्रेरित किया। इस तरह से आज के दौर में भारतीय बौद्ध समाज के लोगों का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रभाव पढ़ता हुआ दिखाई देता है।

बिज शब्द : बौद्ध तत्वज्ञान, समता, नैतिकता, बंधुता, सदगुण.

प्रस्तावना :

सभी जीवित प्राणियों के लिए अहिंसा, प्रेम और करुणा के बौद्ध धर्म के विचारों ने मानव समाज को प्रभावित किया है। बुद्ध शासनकाल में सम्राट बृहद्रथ तक सारा भारत समृद्ध और वैभवशाली हो गया था। उस समय विश्व में अध्ययन का केंद्र भारत बन गया था। बौद्ध शिक्षा केन्दों के रूप में काशी, कश्मीर, तक्षशिला तथा बाद के काल में नालंदा, वलभी एवं विक्रमशिला काफी प्रसिद्ध हुए है। इस कारण बौद्ध धर्म में वैचारिक स्वतंत्रता गहराई से निहित थी और बौद्ध तत्वज्ञान ने बिना किसी संदेह के वैदिक परंपराओं का पालन करने के लिए हिंदुओं की पारंपरिक सोच को प्रभावित किया है। इस तरह बुद्ध शासनकाल में भारत एक समृद्ध राष्ट्र था। कालांतर मे डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर ने भारत में बौद्ध धर्म का पुनरुत्थान कर धर्म के प्रचार तथा प्रसार का कार्य किया। इसका ही सकारात्मक

परिणाम भारत के जनमानस पर दिखाई देता है। हिंदू धर्म की पारंपरिक मानसिकता से अस्पृश्य लोगों को बाहर निकालकर उन्हे बौद्ध धर्म के माध्यम से समाज को स्वाभिमानी बनाने का कार्य किया है।

मानवी समाज जीवन पर बौद्ध तत्वज्ञान का प्रभाव :

तथागत भगवान गौतम बुद्ध ने ईश्वर, ब्रह्मा, आत्मा आदि चीजों को नकारते हुए बहुजन समाज के कल्याण को महत्वपूर्ण माना है। ईश्वर, आत्मा, ब्रह्मा आदि में विश्वास एक पुरोहित वर्ग का निर्माण करता है और वह वर्ग स्वार्थ के लिए विश्वास पैदा करके मनुष्य पर जन्म से मृत्यु तक शासन करता है। यही बहुजन समाज की पीड़ा का कारण है। इस तरह के भ्रामक विश्वास मनुष्य की खोज प्रवृत्तियों को नष्ट कर देते हैं, इसलिए बहुजन समाज को ऐसे भ्रामक विश्वासों से मुक्त करने के लिए, उन्हें बौद्धिक बनाने के लिए, और बहुजनों के लाभ के लिए, भगवान बुद्ध ने देवता, मोक्ष, आत्मा आदि कर्मकांड और क्षमता का खंडन किया है। इस कारण मानवी समाज जीवन पर बौद्ध तत्वज्ञान का गहरा प्रभाव हुआ है।

सदगुणों का विकास :

व्यक्तित्व निर्माण में संस्कारों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में सामाजिक प्रगति के लिए अनुशासन आवश्यक है। अनुशासन की शिक्षा बौद्ध तत्वज्ञान मे निहित है। बौद्ध धर्म के सभी सिद्धांत पूरी तरह से वैज्ञानिक हैं और सभी सिद्धांतों का एक ही उद्देश्य होता है – मानव समाज का सर्वांगीण विकास हो। मानव जीवन का कल्याण सद्गुणों से ही होता है। बौद्ध धर्म ने न केवल हिंसा न करना, चोरी न करना, व्यभिचार न करना, झूठ न बोलना एवं नशा न करना इन पांच सिद्धांतों का पालन करने का उपदेश दिया है, बल्कि उन्हें सिखाया भी है और इस तरह सद्गुणों के विकास में योगदान दिया है। तथागत गौतम बुद्ध ने जाति, संप्रदाय, वर्ण और सामाजिक स्थिति के किसी भी पहलू पर विचार किए बिना सभी व्यक्तियों के बीच समानता स्थापित करने का उपदेश दिया है। इसने जाति व्यवस्था पर आधारित पारंपरिक हिंदू सामाजिक संरचना को प्रभावित किया।

नैतिक मूल्यों का विकास :

भगवान गौतम बुद्ध ने अपने धर्म में ईश्वर के स्थान पर नैतिकता को महत्व दिया। नैतिकता बौद्ध धर्म का सार है। इसके बिना कोई धर्म नहीं है, नैतिकता धर्म की नींव है। बौद्ध धर्म में मनुष्य को मनुष्य से प्रेम करना चाहिए, यहीं से नैतिकता की उत्पत्ति होती है। ईश्वर से डरने या उससे अनजान होने की कोई आवश्यकता नहीं है। ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए धर्मी नहीं होना चाहिए, बल्कि मनुष्य को मनुष्य के प्रति दयालु होना चाहिए, और धम्म के समान पवित्र होना चाहिए। कुल मिलाकर, बौद्ध धर्म ईश्वर और आत्मा के बारे में नहीं सोचता है, लेकिन मनुष्य को मनुष्य के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए। बौद्ध धर्म में नैतिकता के बीच संबंध बताया गया है। "हिंदू धर्म में, पुजारियों द्वारा स्वार्थ के लिए अनुष्ठान बनाए गए हैं। लेकिन बौद्ध धर्म में, मोक्ष प्रदान करने के लिए ईसाई जैसे पुजारी नहीं है।"1 इस तरह डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर कहते है।

बुद्ध काल में मानवी जीवन नैतिकता पर आधारित था। जो समाज मे शांति और समृद्धि के मूल्यों का विकास करे। इसी कारण सभी सामाजिक, आर्थिक व्यवहार नैतिकता के आधार पर ही किए जाते थे। आज

जनसंख्या वृद्धि के कारण जो समाज मे जो समस्याएं निर्माण हुई है उस समस्या को सुलझाने के लिए मानवी समाज में नैतिकता का ह्रास होता हुआ नजर आता है। 'विश्व वसुधैव कुटुंबकम !' की कल्पना को साकार करने हेतु बौद्ध तत्त्वज्ञान को जीवन में अपनाना होगा। यह चिरंतन सत्य है कि, बौद्ध तत्त्वज्ञान और मानवता एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। नैतिक मूल्यों का जीवन में पालन करना ही बौद्ध दर्शन को साकार करना है। आधुनिक युग में धर्म तथा दर्शन के बीच का अंतर बढ़ रहा है। वैचारिक मतभेदों से दूर होकर हमें मानवता और सदाचार को महत्व देना होगा, तब जाकर समाज में शांति स्थापित होगी। इसलिए आज के विश्व को आतंकवाद से मुक्ति पाने के लिए बौद्ध तत्त्वज्ञान का पालन करना बहुत जरूरी साबित होता है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास :

बौद्ध धर्म ने लोगों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने में मदद की है। चूंकि इस धर्म के सिद्धांत और दर्शन वैज्ञानिक हैं, इसलिए इसकी शिक्षा से लोगों के बीच वैज्ञानिक दृष्टिकोण निर्माण होता है। डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर, अल्बर्ट आइंस्टीन जैसे कई बुद्धिजीवियों ने कहा है कि, बौद्ध धर्म ही सच्चा वैज्ञानिक धर्म है। विश्व में बढ़ते हुए भौतिकवाद और विषमतावादी प्रवृत्ति ने मानवीय मूल्यों का विरोध करनेवाली एक नई संस्कृति का निर्माण हो रही है। आधुनिकता और विकास के नाम पर यह संस्कृति समाज को दुबला, बुद्धिहीन बना रही है। आधुनिक युग में बढ़ती हुई विज्ञान, तकनीकी के साथ मानवीय मूल्य, विचारधारा और भाईचारा नष्ट हो रहा है। इस तरह मानवी समाज मूल्यविहीन उत्तरआधुनिकता की ओर बढ़ता जा रहा है। भगवान बुद्ध का धम्म जीवन से मुक्ति पाने के लिए है। पूरे विश्व में भगवान बुद्धही ऐसे एक व्यक्तिमत्व है जिन्होंने जीवन मे 45 वर्षों तक दुःखी, पीड़ित मानवता के अज्ञान की बेड़ियों को तोड़ने के लिए प्रयास किए है। तत्कालीन काल में वर्ण व्यवस्था और जातिवाद के कारण समाज में स्वतंत्रता, समता, बंधुत्व, न्याय इन मूल्यों का अभाव था। भगवान बुद्ध द्वारा इसका विरोध किया गया। वर्ण व्यवस्था और जाति व्यवस्था के संबंध में मस्जिम निकाय के वासेट्ठ सुत्त में भगवान बुद्ध कहते हैं। "मनुष्य में भेद केवल संख्या में है। मनुष्य में जो गोरक्षा से जीविका करता है। ऐसे को कृषक जानो ब्राह्मण नहीं।"2 इस उदाहरण से भगवान बुद्ध की धारणा स्पष्ट होती है कि, मानव मात्र एक है। कर्म ही मुख्य है वहाँ जाति या वर्ण का अंतर नहीं है। इसी तरह से भगवान बुद्ध ने जातिवाद को समाप्त करके मानवता की स्थापना करने के लिए बौद्ध तत्वज्ञान दिया है। जिससे मानवी जीवन का विकास हुआ है।

भारत का इतिहास इस बात का गवाह है कि, मानव समाज में व्यक्ति की गरिमा तथा व्यक्ती एवं समाज के बीच के संबंधों को परिभाषित करने का सक्रिय प्रयास किया गया। सामाजिक, नैतिक, व्यक्तिगत, या देवी शक्तियां इन मुल्यों के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत में समय-समय पर अनेक अवतारी महापुरुषों ने जन्म लिया, जिन्होंने अपने काल की परिस्थितियों में देश को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने का प्रयास किया है। तथा अन्याय से न्याय की पथ पर अग्रसर होने की प्रेरणा दी है। जिस देश में जाति, धर्म, संप्रदाय, वर्ग और भाषा आदि के नाम पर भेद की स्थिति हो, जहां पर समाज का एक वर्ग निरंतर शोषण, अत्याचार तथा उपेक्षा की पीड़ा भोग रहा हो, इस तरह धर्म और अर्थ पर आधारित विषम व्यवस्था से किसी भी देश का कभी भी विकास नहीं हो सकता। इस देश में ऐसा भी एक समय था, कि जब एक मनुष्य दूसरे मनुष्य को मनुष्य की तरह मानने के लिए तैयार नहीं था। वह एक दूसरे के साथ क्रूर या कठोर व्यवहार करता था। ऐसी स्थिति में समाज का एक वर्ग दूसरे वर्ग के

प्रताड़ना से इतना भयभीत था जितना वह किसी हिसंक पशु से भी नहीं होता है। इस व्यवस्था को बदलने के लिए डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने 1956 में विश्व में शांति प्रस्तावित करने वाला भारत का प्राचीन बौद्ध धर्म को अपनाया और अपने अनुयायियों को इसके माध्यम से विकास की ओर लाने के लिए प्रेरित किया था। वे कहते थे, "आप अगर बुद्ध धर्म का अनुसरण करते हैं, तो विश्व में आपको प्रतिष्ठा, सम्मान प्राप्त होगा। केवल इतना ही नहीं तो आपको प्रबल शक्ति प्राप्त होगी और आपके बच्चों का भविष्य उज्जवल रहेगा। अर्थात आप प्रगति पर अग्रसर रहेंगे।"3 समानता एवं स्वाभिमान से जीने की राह दिखाने का कार्य बौद्ध तत्त्वज्ञान मे ही निहित हैं। जिसके माध्यम से मानवी समाज का भविष्य उज्जवल रहेगा। बोद्ध तत्वज्ञान में व्यक्ती को मनुष्य बनाने की अद्भुत शक्ति है। नीती से लेकर नियम तक सिद्धांत से लेकर दर्शन तक तथा जीवन से लेकर जीवन शैली की प्रायोगिक व्याख्या करने की क्षमता बौद्ध तत्वज्ञान में है।

बौद्ध धर्म ने करुणा, ईमानदारी, प्रेम, परोपकार, अहिंसा, क्षमा, पुण्य, आदि जैसे नैतिक पहलुओं पर जोर देता है। यही कारण है कि बौद्ध धर्म हिंदू धर्म से काफी अलग एक स्वतंत्र और प्रभावशाली धर्म है। इसलिए बाबासाहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर ने 14 अक्टूबर, 1956 को नागपुर शहर में पांच लाख अनुयायियों के साथ बिना रक्त की एक बूंद बहाए बौद्ध धर्म की दीक्षा ली। प्राचीन काल से भारतीय उपमहाद्वीप में कई धर्मांतरण हुए हैं मगर बाबासाहेब अंबेडकर द्वारा किया गया धर्म परिवर्तन बिसवी शताब्दी की एक महान वैचारिक क्रांति थी। जिसने भारतीय सामाजिक आंदोलन के पूरे आयाम को ही बदल दिया था। आजादी के बाद के युग में यह एक ऐतिहासिक और महत्वपूर्ण घटना थी। क्योंकि ये धर्मांतरित लोग हिंदू धर्म में अछूत मानी जाने वाली 'महार, मांग' जाति के थे। हिंदू धर्म इस जाति पर हजारों वर्षों से तरह-तरह के दमनकारी प्रतिबंध लगाकर उनका दमन करता रहा था। उन्हें कोई आर्थिक, धार्मिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं थी। उस समय की हालत बहुत खराब थी की, उच्च वर्ग के हिंदू उनकी छाया को भी स्पर्श नहीं कर सकते थे। तत्कालीन भारतीय समाज में कीड़े, चूहे, गाय और कुत्ते को पवित्र माना जाता था और उनकी पूजा की जाती थी। लेकिन अछूत लोगों का स्पर्श नहीं चलता था। उन्हें भारतीय वर्ण व्यवस्था में सबसे निचले वर्णों में गिना जाता था। उनका जीवन स्तर गरीब, दयनीय और गुलामी से भारा हुआ था। बाबासाहेब अंबेडकर जी ने इन सभी स्थितियों का अनुभव किया और उनका गहराई से अध्ययन करने के बाद, 9 मई, 1916 को, 25 वर्ष की आयु में, "डॉ ए. ए. गोल्डनवाइज़र मन्वशास्त्र सम्मेलन अमेरिका में एक शोध पत्र जिसका नाम था "भारत में जाति: गठन, उत्पत्ति और विकास।"4 प्रस्तुत करके उन्होंने वैश्विक स्तर पर भारतीय जाति व्यवस्था की संरचना प्रस्तुत की। बौद्ध धर्म को स्वीकार करने में बाबासाहेब अम्बेडकर की महत्वपूर्ण भूमिका थी कि, बौद्ध धर्म के माध्यम से दलितों, शोषितों, वंचितों, आदिवासी और कमजोर वर्ग के लोगों का सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक विकास किया जाए। इन उद्देश्यों के साथ, बाबासाहेब अम्बेडकर ने बौद्ध धम्म को स्वीकार किया और 22 प्रतिज्ञाओं का पालन करने का संकल्प लिया। बाबासाहेब ने न केवल भारत के कमजोर वर्गों को केवल धम्मही नहीं दिया बल्कि उन्हें एक आदर्श जीवन जीने का मार्ग भी दिखाया है और सभी भारतीयों को संविधान के माध्यम से स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व और न्याय के मूल्यों को लागू करने के लिए मजबूर किया है और साथ ही सभी को उनके अधिकारों और कर्तव्यों से अवगत कराया।

आज के विज्ञान युग में सारा विश्व एक व्यापक समाज के रूप में परिवर्तित होते जा रहा है। विविध विषयों में होनेवाले अनुसंधानात्मक कार्य और नए-नए अविष्कारों के खोज के कारण विश्व की भौगोलिक दूरियां दिन-ब-

दिन खत्म होती जा रही है। सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और शैक्षणिक दृष्टि से देखा जाए तो, विश्व एक दूसरे के निकट आ रहा है। तो दूसरी और उन सभी में नैतिक मूल्यों की दूरी दिन-ब-दिन बढ़ती हुई नजर आ रही है। विश्व की बढ़नेवाली आबादी, लोगों में विकसित होनेवाली भाषा, संस्कृतिकरण, वैश्वीकरण आदि के कारण प्रत्येक राष्ट्र सामाजिक दृष्टि से एक दूसरे राष्ट्रों के वैचारिक प्रभाव से प्रभावित हो रहे है। विज्ञान व तंत्रज्ञान के माध्यम से पारिवारिक, सामाजिक अंतरकिया सहज संभव होने से उनमें निकटता बढ़ रही है। विश्व के अति प्राचीन संस्कृति में भारतीय संस्कृति का उल्लेख किया जाता है। विश्व के विभिन्न क्षेत्रों से, विभिन्न कारणों से यहां आए विभिन्न जनसमूह के मिश्रित सहअस्तित्व युक्त जीवन से आज के भारतीय समाज का उदय और विकास हुआ है।

निष्कर्ष :

स्वतंत्र, समता, न्याय, भाईचारा यह सामाजिक मूल्य बौद्ध तावज्ञान में भगवान बुद्ध ने मानव जाति के विकास के लिए दिया हुआ एक अनमोल देन है। जिसके माध्यम से मानवी समाज में मैत्री, करुणा, शांति, दान आदि भावनाओं का विकास होता है। विश्व ही मेरा घर है यह भावना अपने आप में स्थित करना चाहिए। बहुजन सुखाय ! बहुजन हिताय ! इस राह पर चलकर मनुष्य दुखों से मुक्ति पा सकता है। यही भगवान बुद्ध के तत्वज्ञान है। जिसमे मानवी जीवन का सर्वांगीण विकास निहित है। भारतीय नवबौद्ध समाज के लोगों ने खुद को स्वाभिमानी बनाने के लिए बाबासाहब ने दिए गए विचारों के माध्यम से अपना विकास करने के लिए प्रयास किए है। उसका ही परिणाम आज दिखाई देता है की, आज के दौर में भारतीय नवबौद्ध समाज के लोगों का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रभाव बढ़ता हुआ दिखाई देता है।

आज के वर्तमान समय में भारतीय समाज पर कई सारी समस्याओं का भडीमार हो रहा है। जिसमें आतंकवाद, दहशतवाद, महंगाई, बेरोजगारी, निर्धनता, प्रदूषण, कोरोना, नोटबंदी, जीएसटी, जातीय विषमता, महिलाओं की समस्याएँ, बढ़ती हुई जनसंख्या की समस्याएं, शिक्षा की समस्याएं, बिजली एवं पानी की समस्या इस तरह से कई सारी समस्याओं को हम नजर नजरअंदाज नहीं कर सकते। इस वैज्ञानिक युग में इन समस्याओं को लेकर तीसरे महायुद्ध की कल्पना करना कोई भी राष्ट्र के लिए हितकारक नहीं हो सकता है। इसीलिए इन सारी समस्याओं की रक्षा करने के लिए फिर एक बार स्वतंत्र, समता, न्याय, भाईचारा को स्थापित करने के लिए बौद्ध तत्वज्ञान की बहुत जरूरी महसुस होती है।

संदर्भ :

- अम्बेडकर, बी. आर, (1985) भगवान बुद्ध और उनका धम्म, सुधीर प्रकाशन, बॉम्बे पृष्ट संख्या 250
- सांकृतायन, राहुल, (1933) मस्जिम निकाय, भारतीय बौद्ध शिक्षा परिषद प्रकाशन, श्रावस्ती पृष्ट संख्या 414.
- बाबासाहब अंबेडकर भाषने खंड 18 भाग 3, पृष्ट संख्या 475
- आगलावे, प्रदीप (2009), समाजशास्त्रज्ञ डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर, सुगवा प्रकाशन, पुणे, पृष्ट संख्या 19.